DIGAMBARRAO BINDU ART'S
COMMERCE & Science College, Bhokar

Dist. Nanded (MH)

Mahatma Gandhi

:: Chief Editor ::

Dr. Panjab Chavan

(Principal, D.B. College, Bhokar)

:: Editor ::

Mr. M.R. Yegaonkar (Director Gandhi Study Center)

Dr. V.D. Hattekar (HOD Dept. of Political Science)

Dr. S.B. Chavan (UGC. Coordinator)

Volume IX Issue III, MARCH - 2020

डॉ. माधवराव पाटील किन्हाळकर,
माजी गृहराज्य मंत्री तथा अध्यक्ष,
कै. दिगंबरराव बिंदू स्मारक समिती, भोकर
जि. नांदेड.

महात्मा गांधी यांच्या दीडशेव्या जयंतीच्या निमित्ताने आपल्या सर्व वाचक वर्गाच्या हाती हा ग्रंथ देताना मला अत्यंत आनंद होत आहे एकंदरीतच या वर्तमान काळामध्ये गांधीच्या विचारांची आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण ठरते जागतिक दहशतवाद पर्यावरण तसेच एकंदरीत जागतिक वातावरणाचा विचार करता गांधीजींचे विचार किती महत्वपूर्ण आहे आपल्या लक्षात येईल. या ग्रंथामध्ये सुध्दा या संदर्भानेच मांडणी झालेली आहे. एके ठिकाणी गांधीजी असे म्हणतात की, जेंव्हा जेव्हा तुम्ही संभ्रमात असाल, किंवा जेंव्हा तुमच्यातला अहं वाढलेला असेल तेव्हा ही कसोटी वापरा - तुम्ही पाहिलेला समाजाच्या शिडीवरच्या शेवटच्या माणसाचा, अगदी सामान्यातल्या सामान्य व्यक्तीचा चेहरा डोळ्यासमोर आणा आणि स्वत:लाच विचारा की तुम्ही जी गोष्ट करु म्हणताय त्यानं या सामान्य व्यक्तीचं काही भलं होणार आहे का? तुम्ही जे करणार आहात त्या गोष्टीनं या सामान्य व्यक्तीचं त्याच्या जिवनावरचं नियंत्रण वाढणार आहे का? त्यानं त्याचं भाग्य अधिक उजळणार आहे का? वेगळ्या शब्दांत सांगायच तर तो नागरिक तुम्ही करत असेलल्या गोष्टीनं आण्खी स्वतंत्र होणार आहे का? जर याचं उत्तर हो असं मिळालं तर ती गोष्ट तशीच करा.... यानं तुमच्या मनातले सर्व संभ्रम दूर होतील.

Mukt Shabd Journal
UGC CARE GROUP-I JOURNAL
ISSN NO : 2347-3150
Web : www.shabdbooks.com
e-mail : submitmsj@gmail.com

UGC APPROVED
IMPACT FACTORS 4.6
DOI:09.0014.MSJ
crossref member
CROSSREF.ORG THE CITATION LINKING BACKBONE

A Peer Reviewed / Referred Journal

Sumit Ganguly
Editor-In-Chief
MSJ
www.shabdbooks.com

Copyrights @ 2020 MSJ : All Rights Reseved.

हिंदी विभाग

32	हिन्दी स्वराज्य गाँधीजी की सामाजिक चेतना का अनोखा दस्तावेज -*प्रा.डॉ.दीपक विनायकराव पवार*	102
33	असगर वजहत के नाटक में गॉधी चिंतन की पडताल एवं संभावनाएँ -*डॉ. निम्मय ए.ए.*	105
34	हिंदी कविता में चित्रित गांधीवाद -*डॉ. बाळू भोपू राठोड*	109
35	धर्म और राजनीति के संदर्भ में महात्मा गांधीजीं के विचार -*डॉ.माधव केरबा वाघमारे*	112
36	आधुनिक हिंदी साहित्य पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव -*डॉ.शेख शहेनाज अहेमद*	114
37	समकालीन साहित्यकारों पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव -*डॉ.शेखर घुंगरवार*	116
38	धर्मनिरपेक्षता और महात्मा गांधी -*डॉ. किरण व्यंकटराव आयनेनिवार*	119
39	वर्तमान परिदृश्य में मूल्यपरक शिक्षा में गॉधीजी के विचारों की विशेष भूमिका -*डॉ. प्रकाशिनी तिवारी*	121
40	150 वर्ष के बाद महात्मा गांधी -*डॉ. पंजाब चव्हाण, श्री.कदम गजानन साहेबराव*	124
41	महात्मा गांधी; भारतीय संविधान की संकल्पक -*डॉ. प्रभाकर जी. जाधव*	126
43	बहुमुखी तथा बहुआयामी गांधी -*डॉ. दत्ताहरी रामराव होनराव*	129
44	महात्मा गांधी 150 वी जयंती (महात्मा गांधी विचार) - *डॉ. गणेश इजळकर व मधुकर बोरसे*	131

■■■■■

ISSN NO : 2347-3150

'हिन्दी स्वराज्य' गाँधीजी की सामाजिक चेतना का अनोखा दस्तावेज

प्रा.डॉ.दीपक विनायकराव पवार
सहाय्यक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, दिगंबरराव बिंदू महाविद्यालय,
भोकर, ता.भोकर, जि.नांदेड

सामान्यतः जन्म से कोई व्यक्ति महान नही होता और न ही उसके विचार महान होते हैं | विचार से दरिद्र एवं व्यवहार से कृपण मनुष्य अपने साथ-साथ सम्पूर्ण समाज के लिए 'ातक होता है | व्यक्तिनिष्ठ मनुष्य जन्म लेता है, थोड़ी बहुत लालसा की पूर्ति करता है और इस संसार से विदा ले लेता है | इसके विपरीत जब मनुष्य व्यष्टि की संकुचित परिधि से ऊपर उठाकर समाष्टिगत चेतना से युक्त हो जाता है तो उसके विचार भी क्रमशः व्यापकता को ग्रहण करते हुए लोक कल्याण की ओर उन्मुख होते हैं | इतनाही ही नहीं वैसे मनुष्य के विचार औ व्यवहार देशकाल की सीमा से परे सार्वदेशिक, सार्वकालिक और सार्वभौमिक हो जाते हैं | दृष्टिकोण अपने आप में मूल्यवान नहीं होता बल्कि जीवन की सरलता, व्यवहार की व्यापकता उसे मूल्यवान बनाती है | जीवन जितना सरल होगा, व्यवहार भी उतना ही व्यापक होगा एवं दृष्टिकोण सहजता, सरलता के साथ-साथ शाश्वतता को प्राप्त करेगा | राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का जीवन इसी प्रकृति की साक्षात प्रमाण है | उनकी सबसे बड़ी विशेषता यही थी की उन्होंने अपने जीवन को 'सत्य-अहिंसा' की ज्वाला में तपाकर सरल किन्तु दृढ़ बना लिया था | उनका जीवन सहजता-सरलता का अनूठा उदाहरण है | उनका जीवन जितना सरल था, व्यवहार उतना ही व्यापक था | परिणामस्वरूप उनके विचार और दृष्टिकोण सहजता को प्राप्त करते हुए अपना मूल्य स्थापित करने में समर्थ हो सके | वर्तमान में जब हम विभिन्न समस्याओं से जूझ रहे हैं और उसके समाधान हेतु राह तलाशते हैं तो अंततः वह राह हमें गाँधी के उन्ही विचारों में मिलती है, भले ही राह मिलने के पश्चात् हम अपने अहंकार वृत्ति के कारण उसे स्वीकार नहीं करे | जिस प्रकार सम्पूर्ण विश्व के विभिन्न धर्मावलम्बियों को अपने अध्यात्मिक चिंतन का स्त्रोत सनातन धर्म में मिल जाता है, उसी प्रकार सम्पूर्ण विश्व के सामाजिक उत्थान के सारे स्त्रोत गाँधी के दृष्टिकोण में विद्यमान है - आवश्यकता है सिर्फ पूर्वाग्रह से मुक्त होकर उनके विचारों के अध्ययन-अनुशीलन, चिन्तन-मनन के साथ आत्मसात करने की |

वर्षो से प्रबुद्ध जनों द्वारा गाँधी के विचारों-सिद्धांतों का निरंतर विवेचन विश्लेषण किया जाता रहा है | अध्ययन की इस सतत् परम्पराओंमें उनमें खुबियाँ-खामियाँ ढूँढी जाती रही है और सामान्य विश्वजन उससे लाभान्वित होते रहे हैं | जहाँ तक गाँधीजी के 'हिन्दी-स्वराज्य' की बात है, उसपर भी हजारों शोधपरक चिंतन प्रस्तुत किये गये हैं | उसी परम्परा में आज की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए जब उसका सामाजिक मूल्यांकन करने की बात की जाती है तो सबसे पहली बात यह है कि 'हिन्दी-स्वराज्य' में गाँधीजी ने जिन बिन्दुओं पर अपने विचार प्रस्तुत किये है उनका हम विवेकपूर्ण तरीके से अध्ययन करते हुए सर्वप्रथम उसकी कसौटी पर स्वयं को जाँचें-परखें तत्पश्चात उसकी विचार-गुत्थियों में छिपे हुए सामान्य एवं सूक्ष्म तथ्यों को सामने रखें| पूर्वाग्रह से मुक्त होकर, संकुचित परिधि से बाहर निकलकर जब उसका स्वच्छ रुप से विश्लेषण करेंगे तो स्पष्ट होगा कि 'हिन्दी-स्वराज्य' में निहित सामाजिकता पूर्णतः सबल, सार्थक, व्यापक एवं मूल्यवान है|

गाँधीजी ने बीसवी सदी के प्रारंभ में (1909 ई.) में 'हिन्द-स्वराज्य' पुस्तक लिखकर न केवल भारत के संदर्भ में बल्कि सम्पूर्ण विश्व के संदर्भ में एक नयी सभ्यता की परिकल्पना की | वे पश्चिमी सभ्यता को मशीनी सभ्यता मानते थे और उसकी अनेक मूलभूत संकल्पनाओं से उनकी असहमति थी | पश्चिमी सभ्यता का आर्थिक ढाँचा, जिसे हमने भी अपनाया, विशेषीकृत उत्पादन पद्धति पर आधारित था अर्थात एक इलाका एक ही वस्तु का विशेष उत्पादन करे और उसे बाजार में बेचकर प्राप्त मुद्रा से अपनी अन्य जरूरत की वस्तुएँ खरीदे | गाँधी ने आत्मनिर्भर गाँव की कल्पना रखी | ऐसी इकाई जो अपनी जरूरत की सारी चीजें पैदा करे | दूसरे शब्दों में पश्चिमी अर्थ-व्यवस्था की उत्पादन धारणा बाजार मूलक थी अर्थात् उत्पादन वही है जो बाजार के लिए किया जाये | इसे सिद्धन्त के अनुसार अपने लिए किया गया उत्पादन, उत्पादन नहीं है | गाँधी जी ने कहा अपने लिए किया गया उत्पादन भी उत्पदन है |

मानव और प्रकृति के बीच प्रतिस्पर्धात्मक एवं शत्रुतापूर्ण द्वंद्व पश्चिमी सभ्यता की एक और प्रमुख विशेषता है | गाँधी ने इसके विपरीत मानव और प्रकृति के बीच समरस तथा सौहार्दपूर्ण संबंध की कल्पना की | पश्चिमी सभ्यता डार्बिन के 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट' के सिध्दांत को लेकर चली और उसने शक्तिशाली के जिंदा रहने के अधिकार को अपना जीवन मूल्य बनाया | गाँधी जी ने इसके ठीक विपरीत दरिद्रनारायण की कल्पना रखी और सबसे कमजोर के जिंदा रहने के अधिकार को न केवल प्रस्तापित किया बल्कि उसके लिए अहिंसात्मक सत्याग्रह के हथियार को ईजाद करके निर्बल की निर्बलता को महान शक्ति में बदल दिया | मानव-विकास की हर योजना की उपयोगिता

ISSN NO : 2347-3150

निर्धारित करने के लिए उन्होंने कसौटी रखी कि योजना से सबसे नीचे बैठे निर्धन कमजोर व्यक्ति को कितना लाभ होगा | उन्होंने राष्ट्रीय आय या राष्ट्रीय उत्पादन के मनमाने सूचकों को विकास की कसौटी मानने के बजाय निम्नतम स्तर की स्थिति की विकास का मापदंड बनाया और सामाजिक की नयी अवधारणा कायम की | सीमित अर्थ में लिया गया, बल्कि उन्हें विकृत किया गया | उदाहरण के लिए उसकी स्वतंत्रता व्यवहार में बुर्जुआ वर्ग की स्वतंत्रता ही रही | जैसे-सम्पत्ति की स्वतंत्रता और भाषण-प्रेस आदि की स्वतंत्रता, लेकिन भूख और शोषण से स्वतंत्रता नहीं | पूँजीवाद की भाँति ही साम्यवाद में स्वतंत्रता का अधिकार सिर्फ सर्वहारा को रहा | समता, बंधुता की धारणाएँ भी वहाँ बहुत संकीर्ण रही जिसके फलस्वरूप वहाँ औपनिवेशिक शोषण, गोरे-काले का भेद, अपने से भिन्न दूसरे मानव समाजों को असभ्य, जंगली, अछूत मानने के दुराग्रह बने रहे | इसलिए गाँधी ने पूँजीवाद और साम्यवाद दोनों को अस्वीकार किया | उन्होंने 'हिन्दी-स्वराज्य' में स्पष्ट किया कि स्वतंत्रता (स्वाधीनता) इस जीवन का सबसे बड़ा आदर्श और सबसे बड़ी उपलब्धि है | इसे उन्होंने अपनी जीवन-शैली से सिद्ध भी कर दिया | उन्होंने पूर्ण विश्वास के साथ कहा कि स्वाधीनता प्रत्येक मनुष्य का जन्मजात अधिकार है, सिर्फ बुर्जुआ या सर्वहारा वर्ग का नहीं | गाँधी ने स्वराज्य के लिए सत्य और अहिंसा को सर्वोपरि अस्त्र के रूप में अपनाया | लोगों में इसकी ताकत को रखने से पूर्व उन्होंने इसे पूर्णतः आत्मसात किया | इस बात को उन्होंने 'हिन्द-स्वराज्य' में स्पष्ट भी किया है | 'सत्य' और 'अहिंसा' का उनके लिए एक ही अस्तित्व था | अहिंसा के बिना सत्य की और सत्य के बिना अहिंसा की वे कल्पना ही नहीं कर सकते थे | उन्होंने अपने जीवन को 'सत्य के प्रयोग' कहा और उनका सत्य था 'आजादी' जिसके लिए उन्होंने सारा जीवन सत्य-अहिंसापूर्ण सत्याग्रही के रूप में बिताया | इस सत्य को पाने के लिए उन्होंने अहिंसा के शर्त के साथ असहयोग, 'सविनय-अवज्ञा' और 'करो या मरो' के कार्यक्रम दिये और उनपर एक दो को नहीं, करोड़ो लोगों को चलना सिखाया | अपने देश में ही नहीं, सुदूर प्रदेशों में भी जहाँ कभी गये भी नहीं, और उनकी मृत्यु के बाद भी लोग आजादी को इस जिंदगी की सबसे कीमती चीज के रूप में सहेजने के लिए खुशी-खुशी अपने प्राणों का बलिदान करने के लिए तैयार होते रहे | मार्टिन ल्युथर किंग के नेतृत्त्व में अमरीका के अश्वेत, ध्यान आनमन चौराहे पर एकत्रित चीनी छात्र या मास्कों को सड़कों पर सेना के हथियारों के सामने खड़ी होने वाली जनता गाँधी के इस जीवन मूल्य का जीवंत प्रमाण है | 'स्वराज्य' के संदर्भ में गाँधी जी ने नैतिकता को अत्याधिक महत्त्व दिया | पश्चिमी सभ्यता के मूल्यों को चुनौती ईसाई धर्म की नैतिकता के आधारपर दी गयी थी | किन्तु, गाँधी जी द्वारा पश्चिमी सभ्यता को दी गयी चुनौती किसी एक धर्म के आधार पर दी गयी चुनौती नही थी, नैतिकता के आधार पर तो थी | लेकिन उन्होंने नैतिकता का स्त्रोत ईसाई महात्माओं संतो की तरह ईश्वर को नहीं, स्वाधीनता को माना | 'ईश्वर सत्य है' कहने के बजाय उन्होंने 'सत्य ही ईश्वर है' कहा | इसका मतलब यह था कि जिसने सत्य को पा लिया और आजादी उनका सबसे बड़ा सत्य था, उसने ईश्वर को पा लिया | यह एक असाधारण प्रस्थापना थी |

सुकरात आदि ग्रीक दार्शनिकों से लेकर ही सत्य, शिव और सुन्दर के मुल स्त्रोत की खोज के प्रयत्न हो रहे थे | साहित्य और कलाओं के मूल के रूप में इन तीन मूल्यों पर बहस होती रही, लेकिन इन मूल्यों का मूल स्त्रोत क्या है, इसके बारे में काफी विवाद बना रहा | कुल मिलाकर एक सर्वोच्च सत्ता, ईश्वर, ब्रह्म, खुदा आदि को इसका मूल स्त्रोत माना जाता रहा | इस संदर्भ में हिन्दू, ईसाई, यहूदी आदि तमाम समाजों की दृष्टि एक-सी थी | लेकिन गाँधी ने असाधारण बात कही | उन्होंने सत्य को स्वतंत्रता का फल कहा | शायद वे शिव और सुन्दर को भी स्वतंत्रता से निकले हुए मूल्य मानते थे, हालांकि इस तरह की बहस का उनहें संभवतः अवसर नहीं मिला | किन्तु स्वतंत्रता के रूप में सत्य का जो सूत्र उन्होंने दिया, डॉ.आँबेडकर और राममनोहर लोहिया ने उसी सूत्र के विकास का सार्थ प्रयास किया | इस प्रकार गाँधी की प्रेरणा से स्वराज्य के बहाने आध्यात्मिकता की एक नयी व्याख्या सामने आयी जिसके अनुसार सत्य, शिव और सुन्दर की आध्यात्मिक एवं कलात्मक उपलब्धियों का स्त्रोत कोई कल्पित सत्ता नहीं, स्वतंत्रता, समता और बंधुता की ऐहिक और वास्तविक आकांक्षाएँ हैं | गाँधी की बातों को समझ ने में आज भी लोगों को बहुत कठिनाई होती है | वे अपने समय से बहुत आगे के व्यक्ति थे | 1909 में 'हिन्द स्वराज्य' लिखकर जब उन्होंने मानव-सभ्यता के संबंध में अपनी कल्पना सर्वप्रथम रखी तब उनके समकालीन भी उनहें समझने में असमर्थ रहे हैं | असहयोग आंदोलन के दिनों में गुरुदेव रवीन्द्र जैसे संवेदनशील और प्रतिभाशाली व्यक्ति ने भी गाँधी जी से लंबी बहस चलायी थी और उनसे असहमति व्यक्त की थी | गाँधी जी के प्रबल प्रशंसक महान लेखक और संत रोमां रोलां भी एक बार गाँधी की बात सुनकर थक रह गये थे | गोलमेज सम्मेलन की यात्रा के दौरान वे रोमां रोलां के मेहमान बने और चर्चा के दौरान जब गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन कार्यक्रम की व्याख्या करते हुए कहा कि अपनी सरकार के खिलाफ भी इस हथियार का उपयोग किया जाना चाहिए तो रोमां रोलां चकित रह गये | उनके प्रबुद्ध पटु शिष्ट नेहरू-पटेल ने तो स्वाधीनता के कुछ दिन पहले उन्हे अव्यावहारिक कहकर दरकिनार ही कर दिया था | ब्रिटिश सरकार उन्हें सबसे बड़ा शत्रु मानती रही, जबकि गाँधी के मन में कभी किसी के प्रति शत्रुता का भाव नहीं था | क्षुद्र, सतही सोच वाले तो उन्हें ढोंगी, पाखंडी आदि विशेषण भी दे रहे | लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, गाँधी अधिकाधिक प्रासंगिक होते गये और आज नयी सभ्यता की तलाश करने वाले विचारकों की नजरें गाँधी पर लगी हुई है |

सामान्यतः लोगों को सबसे अधिक कठिनाई उनकी अहिंसा को समझने में होती है | प्राकृतिक जीवन में प्राणी एक-दुसरे का खाद्य बनते हैं | मानव-सभ्यताएँ अब तक पाशविक बल से अनुशासित रही है | शस्त्र बल के बिना शासन-व्यवस्था की कल्पना ही कोई नहीं कर

ISSN NO : 2347-3150

सकता है | ऐसी स्थिति में मानव जीवन के हर कार्य-कलाप में अहिंसा के प्रयोग को महज सनक ही कहा जा सकता है | किन्तु गाँधी जी को विश्वास था कि ऐसी व्यवस्था संभव है और इसे उन्होंने ‘हिन्दी स्वराज्य’ में स्पष्ट किया | उनकी अहिंसा मुँह पर कपड़ा बाँध कर चलने वाले जैन साधुओं की अहिंसा नही थी और न ‘वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति’ कहने वाले हिन्दुओं की अहिंसा थी | उनकी अहिंसा दसलक्ष्मी धर्म के सर्वोत्तम मूल्य अक्रोध से उत्पन्न मूल्य था जिसमें शत्रुता का पूर्ण निषेध था | गाँधी जी का मानना था कि यह एक महान नैतिक मूल्य है; क्योंकि अपने प्रतिद्वन्दी को, हिंसा द्वारा हटाना मानव की सबसे बड़ी पराजय है | मानव का प्रयास प्रतिद्वन्दी को जीतने, उसे अपना बनाने का लक्ष्य बनाता है | यदि ऐसा करने के बजाय उसका नाश होता है तो यह मानव की पराजय है | यह एक तरह से अपनी प्रेमिका की हत्या करने जैसा कुकर्म है | सहनशीलता, क्षमा, संयम, अस्तेय, शौच, लालसाओं पर नियंत्रण, बुद्धि की उपासना, विद्या व्यसन, सत्य और अक्रोध (सत्य-अहिंसा) धर्म के इन दस लक्षणों को गाँधी जी ने अपने जीवन में उतारा | इस दृष्टि से परम धार्मिक व्यक्ति थे |

निष्कर्ष :-

निःसंदेह गाँधी जी जन्म से नही बल्कि अपने मन, वचन और कर्म से धार्मिक थे | इसलिए उनका कोई भी दृष्टिकोण कोरी कल्पना नहीं थी, बल्कि जीवनगत अनुभूत सत्य था | ‘हिन्द स्वराज्य’ में जो बातें उन्होंने कही वे मात्र कल्पना लोक की चीज नहीं है | उसे उन्होंने अपने व्यावहारिक जीवन में उतारा | दक्षिण आफ्रिका से लेकर अपने जीवन के अंतिम क्षण तक उन्होंने जो भी सोचा, समझा और किया उसमें कहीं भिन्नता नहीं थी | उसका आधार सर्वप्रथम सामाजिक था तत्पश्चात राजनीतिक | गाँधी जैसा मनुष्य समाज पर राजनीति थोप नहीं सकता, बल्कि वे तो राजनीति को समाज का अनुगामिनी बनाना चाहते थे | क्योंकि उनका पूर्ण विश्वास था कि वैसी राजनीति जो सत्ता-सुख के लिए होगी उसे मानव और समाज से कोई लेना-देना नहीं होगा | सत्ता लोभी तो स्वभावतः स्वार्थी होते हैं और स्वार्थी व्यक्ति सर्वप्रथम अपने अहं की तुष्टि चाहता है | जहाँ अहं की तृष्टि होगी वहाँ शोषण और दमन होगा और जहाँ शोषण-दमन होगा वहाँ मानवता की कल्पना करना भी निरी मूर्खता है | इसलिए गाँधी जी ने ‘हिन्दी स्वराज्य’ में स्वाधीनता की बात कही और चिकित्सक, वकील जैसे पेशे को सिरे से नकार दिया तथा आधुनिक सभ्यता की देन रेलगाड़ी और ट्रामगाड़ी को भारतीय सामाजिक समरसता का सबसे बड़ा शत्रु माना | इसलिए उन्होंने आधुनिक सभ्यता पर सख्त टिप्पणी करते हुए कहा च्इसमें मेरी जो मान्यता प्रकट की गयी है, वह आज पहले से ज्यादा मजबूत बनी है | मुझे लगता है कि अगर हिन्दुस्तान आधुनिक सभ्यता का त्याग करेगा तो उससे उसे लाभ ही होगा |छ निश्चित तौर पर ‘हिन्दी स्वराज्य’ गाँधी जी की सामाजिक चेतना का अनोखा दस्तावेज है, जरूरत है उसे खुले दिमाग से जाँच-परख करते हुए आत्मसात करने की | मैं अपने वक्तव्य का अंत गाँधी जी के उस कथन से करना चाहूँगा जिसमें उन्होंने एक अकाट्य सत्य को रखा था - च्मैं तो कहते-कहते चला जाऊँगा, लेकिन किसी दिन याद आऊँगा कि एक मिस्कीन आदमी जो कहता था, वही ठीक था |

संदर्भ ग्रंथ :

1) गांधी अम्बेडकर, दलित एवं सामाजिक न्याय, डॉ.बबीता वर्मा, आविष्कार पब्लिशर्स, जयपूर |
2) गाँधी विचार, संपादक डॉ. पंजाब चव्हाण, निर्मल प्रकाशन, नांदेड |
3) हिंद स्वराज गांधी का शब्द अवतार, गिरिराज किशोर, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली |
4) गाँधी दृष्टि, रामजी सिंह, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली |
5) गाँधी का सामाजिक चिन्तन, डॉ.एम.के.मिश्रा, डॉ.कमल दा'ीच, अर्जून पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली |
6) गाँधी एक अध्ययन, संपादिका, सुरजितकौर जौली, कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली |
7) हिन्द स्वराज्य, म.गांधी, परंधाम प्रकाशन, पवनार वर्धा |
8) महात्मा गाँधी और उनकी विचारधारा, जे.आर.कोंकंडाकर, श्री मंगेश प्रकाशन, नागपूर |
9) महात्मा गाँधी जीवन और दर्शन, रामलाल विवेक, पंचशिल प्रकाशन, जयपूर |
10) गाँधी एक अध्ययन, रमेश सक्सेना, विश्वभारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली |
11) गाँधी और गाँधी विचार का सौर मंडल, रामजीसिंह, अर्जून पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली |
12) महात्मा गाँधी धर्म, पंथ, एवं राजनीति, डॉ.आदर्शकुमार, माथुर रितू पब्लिकेशन्स, जयपूर |
13) गाँधी एवं भारत राष्ट्रवाद, ब्रह्मदत्त शर्मा, रचना प्रकाशन, जयपूर |

▪▪▪▪▪